Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

संत रविदास और उनका भक्ति मार्ग

डॉ. डी.पी. चंद्रवंशी*

* सहा. प्राध्यापक (हिन्दी) शा.जे.एम.पी. महाविद्यालय, तखतपुर, जिला - बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – संत समाज अपने घर, मोहल्ल, देश, समाज व युग की सीमाओं से परे होते है किसी बंधन से वे बंधे नहीं होते। वे अपने नहीं अपितु सबके होते हैं। संत समाज भूत, भविष्य, वर्तमान को अपने में पिरोए रहते हैं। ये आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्ग दर्शक प्रेरक और पूजनीय होते हें। संपूर्ण समाज इनके वचनों से अभिभूत होता है। समाज का दर्पण संत है जो समाज को एक सूत्र में पिरोए रहते हैं। समाज में एकता, समानता, बंधुत्व, सहृदयता, शिष्टता की भावनाओं को विकसित करने में धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा लोग संत समाज से ही प्राप्त करते है। इस संत समाज के विचारक पथद्रष्टा संत रविदास हैं।

प्रस्तावना – युग चेत्ता, युग द्रष्टा, संत, विचारक, समाज सुधारक, भविष्य दर्शी थे संत रैदास। इनकी दृष्टि सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक थी। इनका विचार तत्व सदा प्रासंगिक रहा है। जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है। संत रैदास की काव्यनुभूति गूढ़, और सहज है जो मानव के सहृदय में पैठ कर जाती है। इनका साहित्य आत्मविश्वास, आशावाद और श्रद्धा की भाव संचार में सहायक है। ये तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्र अंकित किये हैं। कबीरदास, धन्ना, पीपा, सेन, रैदास, दादू दयाल संत परम्परा के प्रमुख हस्ताक्षर है।

'संत काव्य के आविर्भाव से बहुत पहले ही रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, रामानंद आदि आचार्यो ने वैष्णव भक्ति आंदोलन का व्यापक प्रचार-प्रसार कर दिया था। कबीर, रैदास, सेन, पीपा आदि रामानंद के ही शिष्य थे।'[1]

तत्कालीन हिन्दू समाज विषय परिस्थितियों से गुजर रहा था। लोगों की धार्मिक आस्था नगण्य हो रही थी, आर्थिक विषमता व्यापक हो रही थी। जातिगत वैमनस्यता चरमोत्कर्ष पर थी। समाज को संत नामदेव, पीपा, धन्ना, रैदास, कबीर दादू गैसे संतों की आवश्यकता थी। ये संत ही भक्ति काल को स्वर्णयुग बनाने में अहम थे। स्वामी रामानंद के 12 शिष्यों में से एक थे संत रविदास, महान कर्मयोगी संत रैदाय कबीर के समान ही अनपढ़ और निरक्षर थे किन्तु सनातन धर्म से परिचित थे। 'संत रविदास के काव्य का कोई प्रामाणिक संग्रह अभी तक उपलबध नहीं हो सका है। उनकी कतिपय फुटकर रचनाएं ही मिलती है। उनका आत्मनिवेदन बड़ा ही मर्म स्पर्शी है।'[2]

मानवतावादी युग की प्रतिष्ठा चाहने वाले संत रविदास यद्यपि निम्न जाति के थे। किन्तु उनकी चाह मानवतावादी थी। वे कहते थे कि कोई छोटा-बड़ा नहीं सब समान व प्रसन्नचित हो –

'ऐसा चाहौ राज मैं, जहां मिलै सबै को अन्न।
छोट बड़ौ सभ सम बसैं, रविदास रहै प्रसन्न।।'

नाम की महिमा ही कलयुग में एक मात्र मुक्ति तथा सुखी जीवन का आधार है।'[3] संत रविदास बाल्यकाल से ही प्रभु भक्त थे, समाज सुधारक थे, जन-जन की पीड़ा को स्वयं अनुभव करते थे, वे राम नाम को ही सभी रोगों की औषधि मानते थे।

'हरि सा हीरा छोड़ कै, करै आन की आस।
ते नर जमपुर जाहिगे, सत भाषै रविदास।।'

रैदास तीर्थयात्र के स्थान पर मन में ही प्रभु की प्राप्ति का संदेश देते थे –

'का मथुरा, का द्वारिका, का काशी, हरिद्वार।
रविदास खोजा दिल आपना, तउ मिलिया दिलदार।।'

ईश्वर प्राप्ति का केवल एक ही मार्ग है और वह है प्रेम मार्ग रैदास कहते हैं –

'जोगीसर पावहिं नहीं, तुअ गुण कथन अपार।
प्रेम भगति कै कारणै, कहु रविदास चमार।।'

रविदास केवल प्रभु सुमिरण पर भरोसा करते थे। उपवास, व्रत, पूजापाठ को कर्म से आगे नहीं मानते थे। वे कहते हैं –

'कहै रैदास प्रकास परम पद, का जप तप ब्रत पूजा।
एक, अनेक एक हरि, करौ कवण विधि दूजा।।'

कबीर दास की तरह उनकी सोच हिन्दू मुस्लिम वैमनस्यता के स्थान पर एकता स्थापित करना था –

'रैदास कनक और कंगन माहि, जिमि अंतर कछु नाहि।
तैसे ही अंतर नहीं, हिन्दुअन तुरकन माहि।।'

संत रविदास तो राम रहीम को अलग नहीं मानते थे उनका कहना था दोनों एक ही है –

'रविदास हमारी रामजोई, सोई है रहमान।
काबा, काशी जानी यही, दोनों एक समान।।'

कबीर की भांति सिर मुंडाने को संत रविदास व्यर्थ कहते हैं –

'कहा भयौ जू मूंड मुंडायौ, बहु तीरथ ब्रत कीन्हें।
स्वामी दास भगत अरू सेवग, जो परम तन नहीं चीन्हैं।।'

संत रैदास राम नाम को ही सर्वोपरि मानते हुए कहते है –

'राम नाम बिन जे कछु करिए, सो सब भरम कहाई।'

संत रविदास मानव की सफलता भक्ति से मानते हैं अहंकार का त्याग ही भक्ति प्राप्ति का का मार्ग है –

'कह रैदास तेरी भगति दूरि है, भाग बड़े सो पावै।
तजि अभिमन मेटि आपा पर, पिपिलक हवैचुनि खावै।।'

उन्होंने स्वकर्म और सत्कर्म को ही भक्ति माना है वे कर्म को प्रधान मानकर कहते हैं –

'मन चंगा तो कठौती में गंगा।'

उनका कहना था कि व्यक्ति कर्म से ऊंचा और कर्म से ही नीचा होता है –

'रविदास जनम से कारनै होत न कोउ नीच।
नर कूँ नीच करि डारि हैं, आछे करम की नीचा।'

संत रविदास का काव्य जनता के लिए है जो आज भी प्रासंगिक हैं–

'मन चंगा तो कठौती में गंगा।।'
'प्रभु जी तुम चंदन हम पानी।।'

'जन रविदास राम रंगिराता के अनुसार रविदास राम–रंग में पूर्णता रंग गए थे, इनकी प्रेम की रस्सी बड़ी मजबूत है। जिससे इन्होंने ईश्वर को बांध रखा है। तभी ये कह उठते हैं कि अब कैसे टूटे नाम रट लागी।'[4]

संत रैदास की वाणी आज के दिशाहीन मानव को उचित दिशा देने की सामर्थ्य रखती है। नि:संदेह रैदास जी गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भी उच्च कोटि के विरक्त संत थे। जूते सीते–सीते ही ज्ञान भक्ति का ऊंचा पद प्राप्त किया था।'[5]

निष्कर्ष – गीता का यह पाठ कर्मव्येवाधिकारस्तु, मा फलेशु कदाचन। यह वह प्रकाश स्तंभ है जो निराश–वासना, प्रतिशोध और प्रतिहिंसा के अंधकार में भटकते हुए मानव समाज को शताब्दियों से प्रकाश दे रहा है। और भविष्य में भी मार्ग प्रदर्शित करता रहेगा।'[6]

संत रविदास शिक्षित न होते हुए भी एक सफल कवि, संत, समाजसुधारक जैसे प्रतिभा उनमें थी। उनका संपूर्ण जीवन काल प्रभु स्मरण, जन–जन को समुचित मार्ग दिखाना एवं कर्म करते रहा उनके जीवन का एक यथार्थ पहलू है जो आने वाले सदियों तक प्रेरणा स्रोत बना रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. चातक डॉ. लक्ष्मीनारायण एवं पाण्डेय राजकुमार साहित्यिक निबंध कॉलेज बुक डिपो जयपुर पृ. 54
2. त्रिपाठी ओम प्रकाश, संत साहित्य और लोक मंगल, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद 1993 पृ. 19
3. शर्मा रोहित, संत रविदास, विश्वपुस्तक केन्द्र नई दिल्ली 2006 पृ. 55
4. राम रूस्तम, हिन्दी आलोचना और भक्ति काव्य, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 2001 पृ. 14
5. ज्ञानेश्वर डॉ. उमेशपुरी, भारत के संत और भक्त, रणधीर प्रकाशन हरिद्वार 1995, पृ. 345
6. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास मयूर पेपर बैक्स नोएडा 1993 पृ 141

****